आवश्यक सूचना

संतबानी पुस्तकमाला के उन महात्माओं की लिस्ट जिनकी जीवनी तथा बानियाँ छप चुकी हैं

कबीर साहिब का अनुराग सागर
कबीर साहिब का बीजक
कबीर साहिब का साखी-संग्रह
कबीर साहिब की शब्दावली—चार भागों मे
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेखते, भूलने
कबीर साहिब की अखरावती
धनी धरमदास की शब्दावली
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) भाग १ 'शब्द'
तुलसी शब्दावली और पद्मसागर भाग २
तुलसी साहिब का रत्नसागर
तुलसी साहिब का घट रामायण—२ भागों में
दादू दयाल भाग १ 'साखी',—भाग २ "पद"
सुन्दरदास का सुन्दर बिलास
पलटू साहिब भाग १ कुँडलियाँ । भाग २ रेखते, भूलने, सवैया, अरिल, कवित्त। भाग ३ भजन और साखियाँ
जगजीवन साहब—२ भागों में
दूलनदास की बानी
चरनदास जी की बानी, दो भागों में
गरीबदास जी की बानी
रैदास जी की बानी
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी
भीखा साहिब की शब्दावली
गुलाल साहिब की बानी
बाबा मलूकदास जी की बानी
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी
यारी साहिब की रत्नावली
बुल्ला साहिब का शब्दसार
केशवदास जी की अमीघूँट
धरनीदास जी की बानी
मीराबाई की शब्दावली
सहजोबाई का सहज-प्रकाश
दयाबाई की बानी
संतबानी संग्रह, भाग १ 'साखी',—भाग २ 'शब्द'
अहिल्या बाई (अंग्रेजी पद में)

अन्य महात्मा जिनकी जीवनी तथा बानियाँ नहीं मिल सकीं

१ पीपा जी । २ नामदेव जी । ३ सदना जी । ४ सूरदास जी । ५ स्वामी हरिदास जी । ६ नरसी मेहता । ७ नाभा जी । ८ काष्ठजिह्वा स्वामी ।

प्रेमी और रसिक जनों से प्रार्थना है कि यदि ऊपर लिखे महात्माओं की असली जीवनी तथा उत्तम और मनोहर साखियाँ या पद जो संतबानी पुस्तकमाला के किसी ग्रन्थ में नहीं छपे हैं मिल सकें तो कृपा पूर्वक नीचे लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें। इस कष्ट के लिए उनको हार्दिक धन्यवाद दिया जायगा। यदि पाठक महोदय ऊपर लिखे महात्माओं का असली चित्र प्राप्त कर सकें, तो उनसे प्रार्थना है कि नीचे लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें। चित्र प्राप्ति के लिए उसका उचित मूल्य या खर्च दिया जायगा।

मैनेजर—संतबानी पुस्तकमाला, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

बाबा मलूकदास जी

अपने मुख्य चेलों के साथ
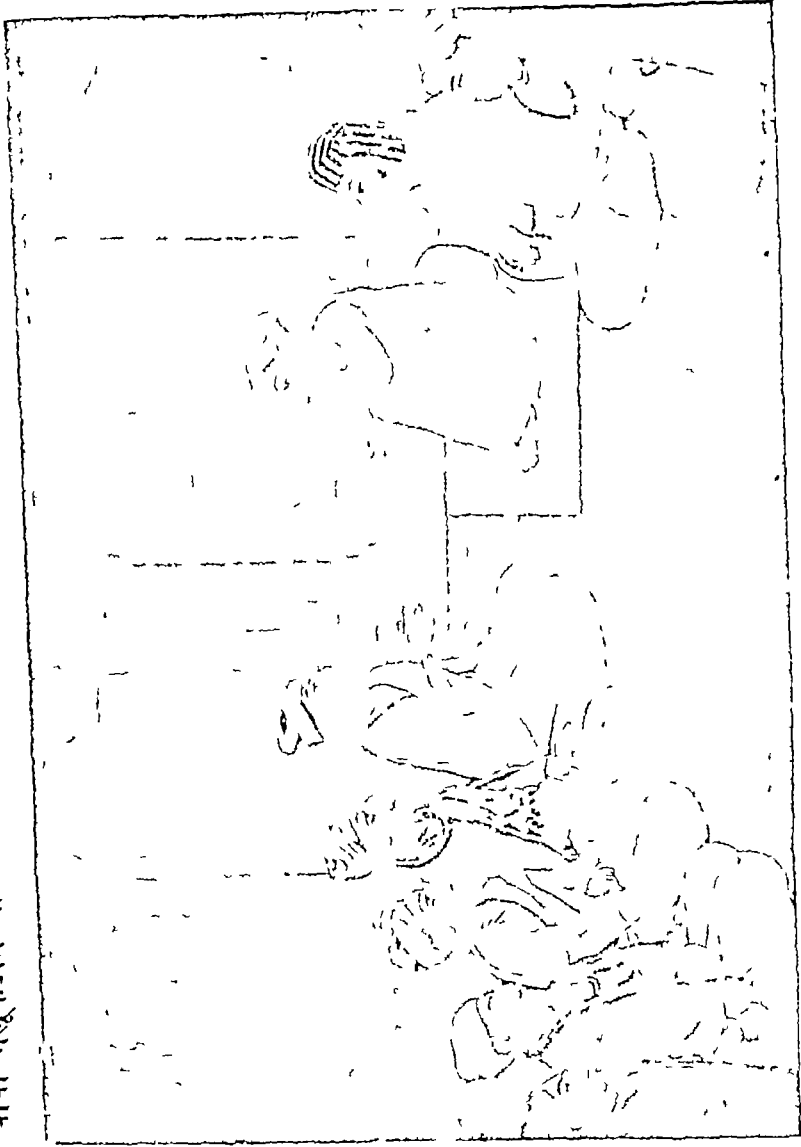
मलूकदासजी का जीवन-चरित्र

बाबा मलूकदासजी जिला इलाहाबाद के कड़ा नामी गाँव में बैसाख बदी ५ सम्बत् १६३१ विक्रमी में लाला सुन्दरदास खत्री कक्कड़ के घर प्रगट हुए। जब पाँच बरस के हुए तो मकान से बाहर गली में खेला करते थे और खेल के दर्मियान जो कुछ काँटा कूड़ा करकट गली में पड़ा होता उसे उठाकर एक कोने में डाल देते कि किसी के पाँव में लग कर कष्ट न हो। एक दिन की बात है कि जब वह मामूल मुवाफिक खेल रहे थे एक पूरे महात्मा उसी गली में आ निकले और उनको देख कर लोगों से पूछा कि यह किसका लड़का है और यह सुनकर कि वह सुन्दरदास का बेटा है बाप को बुलवाया और कहा कि अचरज है कि यह लड़का गली में इस तरह अकेला खेल रहा है इसकी आजानुबाहु यानी लम्बी भुजा इस बात की सूचक हैं कि या तो यह सात दीप का अखंड राजा हो या ऊँची साध गति को प्राप्त हो—बाबा मलूकदासजी की इतनी लम्बी बाँह थीं जो खड़े होने से घुटने के नीचे पहुँचती थीं। इस बात को सुनकर सुन्दरदास तो अचरज में आकर हक्के बक्के हो गये पर बाबा मलूकदास बोले कि महात्माजी आप ठीक कहते हैं।

मलूकदासजी साध सेवा लड़कपन ही से बड़ी नेष्ठा से करते थे, जो साधू और भूखे आते उनका सम्मान और खाने पीने की फिकर रखते। एक दिन का जिकर है कि एक मंडली साधुओं की आई और भोजन माँगा। बाबाजी ने घर के भंडार घर में सेंध लगा कर जो कुछ सामग्री थी निकाल ली और साधुओं को खिला दिया। जब उनकी मा रसोई के समय सीधा निकालने गई तो वहाँ कुछ न पाया बेचारी रोने लगी कि अब घर के लिए कहाँ से खाना बनाऊँ और बोली कि यह काम मल्लू का है। इसी दर्मियान में बाबा मलूकदासजी आ पहुँचे और पूछा कि मा क्यों रोती है। मा बोली कि बेटा तुम्हारी करतूत पर रोती हूँ कि भंडारे की सब सामग्री साधुओं को खिलाकर बाप मा को भूखा रक्खोगे। बाबाजी बोले कि मैंने तो एक दाना नहीं लिया है जिस पर मा झुँझला कर उन्हें भंडारघर में पकड़ ले गई कि देख सब बर्तन तो खाली पड़े हैं लेकिन वहाँ पहुँच कर जो देखा तो सब सामग्री ज्यों की त्यों भरी पाई।

जब इनकी अवस्था दस ग्यारह बरस की हुई तो बाप ने इन्हें ब्योपार में लगाना चाहा और कम्मल थोक में लेकर कहा कि इनको बाजार में बेच लाया करो। देहात में हर आठवें दिन पैंठ लगती है सो यह आठवें दिन कम्मल बेचने जाते थे और इस दर्मियान में कोई साधू या गरीब इनसे माँगता तो उसे योंही दे देते।

एक बार यह एक दूर के गाँव में कम्मल बेचने गये लेकिन उस दिन न तो कोई कम्मल बिका और न कोई मँगता मिला जिसे मुफ्त दे देते, पूरा गट्ठर कम्मलों का कड़ी धूप में सिर पर लाद कर घर लाने में थक गये और इसलिये रास्ते में एक नीम के पेड की छाया में बैठ गये कि एक मजदूर आया और कहा कि एक टका पर हम तुम्हारा गट्ठर घर पर पहुँचा देंगे। मजदूर तेज चाल से आगे बढ गया और बाबाजी आप बेफिकर भजन करते हुए घर लौटे। मजदूर के अकेले गठरी लाने पर इनकी मा को सन्देह हुआ कि कहीं कुछ कम्मल निकाल न लिये हों इसलिये उसे थोडा सा खाना देकर खिलाने के बहाने कोठरी में बन्द कर दिया कि जब बेटा आवे तो गठरी का माल सहेज कर उसे जाने दे। जब मलूकदासजी पहुँचे तो वह क्रोध से बोली कि ऐसी बेपरवाही क्यों करते हो अब गट्ठर खोलकर कम्मल गिन लो अगर पूरे निकले तो कोठरी से मजदूर को जाने दो मैंने उसे खाने को दे दिया है। बाबाजी घबराये हुए कोठरी खोल कर भीतर घुसे तो देखा कि मजदूर गायब है सिर्फ एक टुकड़ा रोटी का पडा है जिसे प्रसाद के भाव से बाबाजी ने उठाकर खा लिया और मा के चरनों पर गिरकर बोले कि तू बडी भाग्यमान है कि ईश्वर ने तुझे मजदूर के रूप मे दर्शन दिया और मुझे बहका दिया अब मैं इसी कोठरी मे बैठता हूँ, जब तक न कहूँ मत खोलना और न शोर गुल करना। इस तरह बाबाजी भगवन्त के ध्यान में बैठ गये जब दूसरे या तीसरे दिन साक्षात दर्शन पाये तब बाहर निकले और मा के चरनों पर मत्था टेका। फिर इसी तरह ध्यान और भजन का नेम कर लिया।

अब तो बाबा मलूकदास की कीर्त्ति चारों ओर फैली और हजारों आदमी दूर दूर से दर्शन को आने लगे और नित प्रति सतसग और सत-उपदेश से अनेक जीव लाभ उठाने लगे।

बाबाजी के चमत्कार और करामात की ऐसीही और इससे बढ़ कर बहुत सी कथा प्रसिद्ध हैं जिन सब के यहाँ लिखने की जरूरत नहीं है लेकिन थोडे से कौतुक जो उनके प्रेमी स्वग्रामी लाला रामचरनदास जी मेहरोत्रे खत्री ने लिख भेजे हैं वह सक्षेप मे नीचे छापे जाते हैं, पाठक जन जैसा जिसका निश्चय हो मानें। इस मे सन्देह नही कि पूरे साध और मालिक के सच्चे भक्त सर्व-समरथ हैं परन्तु वह अपनी शक्ति को कहाँ तक बाहर प्रगट करते हैं इसको हर एक अन्तर अभ्यासी जानता है :—

(१) कहा जाता है कि एक बार भारी अकाल पडा यहाँ तक कि पेडों मे पत्ती तक खाने को नहीं रह गई, हजारों आदमी वर्षा के लिये हाहाकार करते बाबाजी के चरनों पर आगिरे। बाबाजी ने पहिले तो अपनी असमरत्थता बहुत कुछ बयान की पर जब वह लोग किसी तरह न माने तो दयावस उनके साथ मैदान में प्रार्थना करने को चले। इस बीच मे बाबाजी का एक गुरुमुख चेला लालदास आया और अपने गुरु को गद्दी पर न पाकर हाल पूछा तो मालूम हुआ कि गाँव वालों के

साथ नगरी के बाहर पानी बरसने के लिये प्रार्थना करने गये हैं। यह सुनकर चेले को इन्द्र पर बड़ा क्रोध आया कि वह ऐसा अहंकारी है कि जब हमारे गुरू महराज उठकर जावै तब वह पानी बरसावै यह कह कर एक साधू का भंग-घोटना उठाकर बोला कि अभी एक सोंटा इन्द्र को ऐसा लगाता हूँ कि इन्द्रासन सहित यहाँ गिरता है परन्तु भंग-घोटने का सोंटा उठाते ही इन्द्र काँप उठा और उसी दम बड़े वेग से पानी बरसने लगा। बाबाजी अभी मैदान में न पहुँचे थे कि वर्षा देखकर रास्ते से अपने आश्रम को लौट आये और यहाँ सब वृत्तान्त सुनकर चेले पर बहुत अप्रसन्न हुए कि देवताओं पर इस तरह जोर न चलाना चाहिये—उनसे राजी से काम लेना चाहिये। चेले ने बड़ी दीनता से छिमा मांगी जिस पर गुरूजी ने आज्ञा की कि जाकर पृथ्वी-परिक्रमा कर आओ तब तुम्हारा अपराध छिमा होगा। चेला यह आज्ञा पाते ही गुरू को दंडवत करके रवाना हुआ और गङ्गा में कूद पड़ा और वहाँ से समुद्र में एक जहाज के पास जा निकला। खलासियों ने उसे बहता देखकर निकाल लिया और जहाज के मालिक सौदागर के पास लाये। सौदागर ने पूछा कि तुम्हारा जहाज कहाँ तबाह हुआ जिस पर इसने जवाब दिया कि कहीं नहीं हम अपने गुरू की आज्ञा से पृथ्वी-परिक्रमा को निकले हैं और उसके विशेष प्रश्न करने पर कुल हाल कह सुनाया और अपने गुरू का पूरा पता ठिकाना बतला दिया और फिर समुद्र में कूद कर गोता मार कर गायब हो गया। सौदागर अचरज में रह गया और उसके मन में गुरुजी की महिमा पूरे तौर पर समा गई।

(२) कुछ दिन पीछे सौदागर का जहाज बड़े खतरे में पड़ा तब उसने सङ्कल्प किया कि अगर जहाज बाबा मलूकदासजी की दया दृष्टि से बच जाय तो मैं चौथाई माल उनके चरणों में भेट करूँगा। दया से जहाज बच गया और सौदागर बाबा जी की सेवा में चौथाई माल लेकर कड़ा में हाजिर हुआ और सब हाल कह सुनाया। उस समय के बादशाह आलमगीर का वजीर बाबाजी के पास मौजूद था उसका मन मोती की एक कीमती माला देखकर बहुत ललचाया जिसे सौदागर बाबाजी के गले में पहिराने को हाथ में लिये था। बाबाजी सौदागर से बोले कि किसी का माल सेंत में लेना दोष की बात है पर हमने तुम्हारे जहाज को तबाही से बचाने में बड़ा परिश्रम किया है यह कह कर अँगोछे को अपने कन्धे से उठा कर पीठ को दिखलाया जिस पर बहुत से दाग मौजूद थे। फिर माला को सौदागर के हाथ से लेकर वजीर के गले में डाल दिया।

(३) वजीर वहाँ से मगन होकर बादशाह के यहाँ आया और बाबा मलूकदास का सब हाल कह सुनाया और बड़ी महिमा गाई। आलमगीर ने जो बड़ा कट्टर था हुक्म दिया कि तीन अहदी तुर्त जाय और बाबा मलूकदास को जिस तरह से बैठे हों लाकर हाजिर करें। उन तीन अहदियों में दो भले आदमी थे और एक लुच्चा जिसने हठ किया कि जिस सूरत में बाबाजी बैठे होंगे उसी दम पकड़ लावेंगे परन्तु मौज से यह तीसरा अहदी रास्ते ही में मर गया। बाक़ी दो बाबाजी के आश्रम पर पहुँचे और बाबाजी से अरज करने को कि दूसरे दिन सबेरे उनके साथ चलेंगे मंजूर

किया। लेकिन पहिले ही दिन साँझ को वावाजी सतसग से अन्तरध्यान हो कर दिल्ली जा पहुँचे और वादशाही महल में जहाँ वादशाह अपनी वेगम के साथ बैठे थे जा खडे हुए। वादशाह ने घबराकर पूछा कि तुम कौन हो वावाजी ने जवाव दिया कि मलूका जिसको आपने याद किया है। वेगम हट गई और वादशाह ने वावाजी को वडे आदर से बैठाया और उनकी जाति पूछी वावाजी ने जवाव दिया कि फ़कीरों के जात पाँत नहीं होती इस पर वादशाह ने उनके खाने को खिचडी पकाने का हुक्म दिया जब पक कर देगची आई और खोली गई तो उसमें से खिचड़ी के बदले कुत्ते के पिल्ले जीते हुए निकल आये जिन्हे देखकर वावाजी ने वादशाह से पूछा कि आप यही खिचडी खाते हैं। वादशाह ने वावरची पर वहुत क्रोध कर दूसरी खिचडी बनाने का हुक्म दिया। इस बार देगची खोलने पर उसमे से राख निकली। वावाजी बोले कि यह खाना फ़क़ीरों के योग्य है और उसमे से एक चिटकी राख लेकर फूँक दिया तो ऐसी आँधी पानी दिल्ली भर मे आया कि शहर गारत होने लगा। फिर वादशाह की प्रार्थना पर वावाजी ने दया करके वह उत्पात हटा लिया। ऐसे ही लिखा है कि आलमगीर ने कुएँ के मुँह पर खडे होकर नमाज़ पढ़ी जिसके जवाब में वावाजी ने अधर मे वेसहारे लटकते हुए भजन किया। इन सब चमत्कारों को देखकर शाह आलमगीर को विश्वास हुआ कि वावा मलूकदास पूरे साहेवकमाल हैं और उनसे वडी दीनता के साथ कुछ माँगने को कहा परन्तु वावाजी ने इनकार किया, फिर वादशाह के बहुत गिडगिडाने पर वोले कि अच्छा एक तो जज़िया टिकस जो हिन्दुओं पर लगा है उस को कडा के लिये माफ करदो, दूसरे दोनो अहदियों को एक एक सूबा वख़्श दो और परवाना लिख दो कि मुझको यहाँ न लावे। वादशाह ने उसी दम यह दोनों हुक्म लिखकर वावाजी के हवाले किये जिनको लेकर बाबाजी सतसङ्ग मे आधी रात को फिर प्रगट हुए और अँगोछा जिसको सिर से पैर तक डाले रहा करते थे उठाकर सतसगियों से वोले कि आज वडी देर होगई अब तुम लोग अपने अपने घर जाओ। सवेरे दोनों अहदियों को शाही परवाना दिखलाया उनमें से एक तो सूवेदारी के लालच से लौट आया लेकिन दूसरे ने कहा कि मैं ऐसा दरवार छोड़कर वादशाहत मिले तो उसको भी धूल समझता हूँ—इस दूसरे अहदी की कवर आज तक वावाजी की समाधि के पास मौजूद है।

(४) वावाजी अपना मकान वनवा रहे थे उसमे वहुत से मजदूर दव गये जब निकाले गये तो सव जीते निकले और बयान किया कि वावाजी की सूरत के एक आदमी ने हमारी दवी हुई दशा मे प्रगट होकर रक्षा की।

एक अहीरन का एकलौता लडका मर गया मा के बहुत रोने और प्रार्थना करने पर वावाजी ने अपनी उँगली चीर कर ज़रासा लोहू लडके के मुँह मे डाल कर जिला दिया।

वावा मलूकदास के गुरू बिट्ठलदास द्राविड देश के एक महात्मा थे। बाबाजी गृहस्त आश्रम मे थे और उनके एक वेटी हुई, परन्तु थोड़े ही काल में स्त्री और पुत्री दोनो का देहान्त हो गया।

सम्वत् १७३९ में १०८ बरस की अवस्था को प्राप्त होकर बाबाजी ने चोला छोड़ा। गुप्त होने के छः महीना पहिले उन्होंने अपने भतीजे रामस्नेही से कहा कि तुम हमारी गद्दी पर बैठो। उन्होंने अपनी असमरत्थता बयान की जिस पर बाबाजी ने ढारस दी कि ताक़त बख़्शी जायगी तब वह गद्दी पर बैठे और बाबाजी के बारहों गुर-मुख चेलों ने जो एक से एक बढ़कर थे आकर उनको मत्था टेका और सेवा में आये।

जब बाबाजी के चोला छोड़ने का दिन आया तो उन्होंने अपने चेलों और कुटुम्बियों को बुलाकर कहा कि दोपहर को जब तुम लोगों के अंतर में घंटा और संख का शब्द गाजने लगे तब समझना कि हमने चोला छोड़ दिया और हमारे शरीर को गंगा में प्रवाह कर देना, जलाना मत, सो इस आज्ञा का पूरे तौर पर पालन किया गया और कड़े में उनकी समाधि बना दी गई।

कहते हैं कि बाबाजी का मृतक शरीर पहिले प्रयाग के घाट पर ठहरा और एक घाटिये से पीने को पानी माँगा और फिर डुबकी मार कर काशी में निकला और वहाँ भी पानी और फिर क़लम दवात माँगी जिससे लिख दिया कि मलूका काशी पहुँचा, वहाँ से गोता लगाकर जगन्नाथपुरी में पहुँचा। जगन्नाथजी ने अपने पंडों को स्वप्न दिया कि समुद्र तट पर एक रथी है उसे उठा लाओ। जब वह रथी आई तो पंडे उसे मूर्ति के सन्मुख धर कर आप बाहर निकल आये और मंदिर के पट आपसे आप बंद हो गये। बाबाजी ने जगन्नाथजी से प्रार्थना की कि हमारे विश्राम को आपके पनाले के पास का स्थान और भोजन को आपके भोग के दाल चावल के पछोरन किनका का रोट और तरकारी के छीलन की भाजी मिले जगन्नाथजी ने स्वीकार करके आज्ञा दी कि हमारे भोग से बढ़कर सवाद तुम्हारे भोग में होगा। जगन्नाथजी के पनाले के पास मलूकदासजी का स्थान अब तक मौजूद है और उनके नाम का रोट अब तक जारी है, जो जात्रियों को जगन्नाथजी के भोग के साथ प्रसाद में मिलता है।

बाबा मलूकदासजी के पंथ की मुख्य गद्दियाँ मौज़ा कड़ा ज़िला प्रयाग, जैपुर, इसफ़हाबाद, गुजरात, मुलतान, पटना (बिहार), सीताकोयल (दक्खिन), कलापुर, नैपाल और काबुल में हैं। उनके रचे हुए ग्रन्थ भी कितनेही हैं जिन में मुख्य रत्नखान और ज्ञानबोध समझे जाते हैं परन्तु वह ऐसे हिन्दी अक्षर में हैं जिन्हें उनके कुनबेवाले आप नहीं पढ़ सकते और न उनके पढ़ने का जतन करते छपवाने की बात तो दूर है।

यह थोड़े से चुने हुए शब्द और साखियाँ जो छापी जाती हैं हमको कृपा पूर्व्वक बाबाजी के परम भक्त लाला रामचरनदासजी मेहरोत्रे खत्री कड़ा वाले (बाबू शिवप्रसादजी अकौन्टन्ट इलाहाबाद बंक के पिता) ने बाबाजी के असल दस्तख़ती पुस्तक से नक़ल करा दी हैं जिसके लिये हम उनको अनेक धन्यवाद देते हैं।

संत चरण-धूर,

एडिटर, संतबानी पुस्तक-माला।

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तकमाला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिनका लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियें हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी भी थीं से ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ या फुटकर शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर सक पूरे ग्रन्थ छापे गये हैं और फुटकर शब्दों की हालत में सर्व साधारण के उपकारी पद चुन लिये गये हैं, प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुटनोट में दे दिये गये हैं। जिन महात्मा की बानी है उनका जीवन-चरित्र भी साथ ही में छापा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृत्तान्त और कौतुक संक्षेप से फुटनोट में लिख दिये गये हैं।

दो अन्तिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् संतबानी संग्रह भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकीं, जिनका नमूना देख कर महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-वासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और विद्वानों के बचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१९ में छपी है जिसके विषय में बैकुंठ वासी श्रीमान् महाराजा काशी नरेश ने लिखा था—"वह उपकारी शिक्षाओं का अचरज संग्रह है जो सोने के तौल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तकमाला के जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं जिनमें प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षा बतलाई गई है। उनके नाम और दाम सूचीपत्र में छपे हैं—जो कि नीचे लिखे पते से मँगा सकते हैं—संतबानी की कुल पुस्तकों के नाम और दाम पुस्तक के अंत में भी छपे हैं।

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

मलूकदासजी की बानी

सतगुरु और निज रूप की महिमा

॥ शब्द १ ॥

अब मैं सतगुरु पूरा पाया ।
मन तैं जनम जनम डहकाया[1] ॥ १ ॥
कई लाख तुम रंडी[2] छाँड़ी, केते बेटी बेटा ।
कितने बैठे सिरदा[3] करते, माया जाल लपेटा ॥ २ ॥
कितने के तुम पित्र कहाये, केते पित्र तुम्हारे ।
गया बनारस कर कर थाके, देत देत पिंड हारे ॥ ३ ॥
कई लाख तुम लसकर जोड़े, केते घोड़े हाथी ।
नेकु गये बिलाय छिनक में, कोई रहा न साथी ॥ ४ ॥
आवागवन मिटाया सतगुरु, पूजी मन की आसा ।
जीवन मुक्त किया परमेसुर, कहत मलूकादासा ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

हमारा सतगुरु बिरले जाने ।
सुई के नाके सुमेर चलावै, सो यह रूप बखाने ॥ १
की तो जानै दास कबीरा, की हरिनाकस पूता ।
की तो नामदेव औ नानक, की गोरख अवधूता ॥ २
हमरे गुरु की अद्भुत लीला, ना कछु खाय न पीवै ।
ना वह सोवै ना वह जागै, ना वह मरै न जीवै ॥

(१) ठगाया । (२) स्त्री । (३) सिजदा, दंडवत ।

बिन तरवर फल फूल लगावै, सो तो वा का चेला।
छिन में रूप अनेक धरत है, छिन में रहै अकेला ॥ ४ ॥
बिन दीपक उँजियारा देखै, पँड़ी समुँद थहावै।
चींटी के पग कुंजर[1] बाँधै, जा को गुरू लखावै ॥ ५ ॥
बिन पंखन उड़ि जाय अकासे, बिन पंखन उड़ि आवै।
सोई सिष्य गुरू का प्यारा, सूखे नाव चलावै ॥ ६ ॥
बिन पायन सब जग फिरि आवै, सो मेरा गुरु भाई।
कहै मलूक ता की बलिहारी, जिन यह जुगत बताई ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३ ॥

नाम तुम्हारा निरमला, निरमोलक हीरा।
तू साहेब समरत्थ, हम मल मुत्र के कीरा ॥ १ ॥
पाप न राखै देँह में, जब सुमिरन करिये।
एक अच्छर के कहत ही, भौसागर तरिये ॥ २ ॥
अधम-उधारन सब कहैं, प्रभु बिरद तुम्हारा।
सुनि सरनागत आइया, तब पार उतारा ॥ ३ ॥
तुझ सा गरुवा औ धनी, जा में बड़ई समाई।
जरत उबारे पांडवा, बाव[2] न लाई ॥ ४ ॥
कोटिक औगुन जन करै, प्रभु मनहि न आनै।
कहत मलूकादास को, अपना करि जानै ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

हरि समान दाता कोउ नाहीँ, सदा बिराजैं संतन माहीँ ॥१॥
नाम बिसंभर बिस्व जियावै, साँझ बिहान रिजिक[3] पहुँचावैं ॥२॥
देइ अनेकन मुख पर ऐनै[4], औगुन करै सो गुन कर मानैं ॥३॥

(१) हाथी। (२) गरम हवा। (३) अहार। (४) दर्पण।

काहू भाँति अजार[1] न देई, जाही को अपना कर लेई ॥४॥
घरी घरी देता दीदार, जन अपने का खिजमतगार ॥५॥
तीन लोक जाके औसाफ[2], जनका गुनह करै सब माफ ॥६॥
गरुवा ठाकुर है रघुराई, कहैं मलूक क्या करूँ बड़ाई ॥७॥

॥ शब्द ५ ॥

सदा सोहागिन नारि सो, जा के राम भतारा ।
मुख माँगे सुख देत हैं, जगजीवन प्यारा ॥ १ ॥
कबहुं न चढ़ै रँडपुरा,[3] जानै सब कोई ।
अजर अमर अविनासिया, ता को नास न होई ॥ २ ॥
नर देँही दिन दोय की, सुन गुरजन मेरी ।
क्या ऐसों का नेहरा, मुए बिपति घनेरी ॥ ३ ॥
ना उपजै ना बीनसै, संतन सुखदाई ।
कहैं मलूक यह जानि के, मैं प्रीति लगाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

नैया मेरी नीके चलने लागी ।
आँधी मेँह तनिक नहिँ डोलौ साहु चढ़े बड़भागी ॥ १ ॥
रामराय डगमगी छोड़ाई, निर्भय कड़िया[4] लैया ।
गुन लहासि की हाजत[5] नाहीँ, आछा साज बनैया ॥ २ ॥
अवसर पड़ै तो पर्वत बोझै, तहूँ न होवै भारी ।
धन सतगुरु यह जुगत बताई, तिन की मैं बलिहारी ॥ ३ ॥
सूखे पड़ै तो कछु डर नाहीँ, ना गहिरे का संसा ।
उलटि जाय तो बार न बाँकै, या का अजब तमासा ॥ ४ ॥
कहत मलूक जो बिन सिर खेवै, सो यह रूप बखानै ।
या नैया के अजब कथा, कोइ बिरला केवट जानै ॥ ५ ॥

---

(१) दुख । (२) गुण । (३) रँडापा । (४) डाँड़ा । (५) जरूरत ।

भेद बानी

॥ शब्द १ ॥

मुरसिद मेरा दिल दरियाई, दिल गहि अंदर खोजा।
जा अंदर में सत्तर काबा, मक्का तीसो रोजा ॥ १ ॥
सातो तबक औलिया जा में, भेद न होय जुदाई।
सम्स कमर[1] ठाढ़े निमाज में, दरसै जहाँ खोदाई ॥ २ ॥
हवा हिरिस खुदी[2] मैं खोवा, अनल हक्क जहँ जानी।
बिन चिराग रोसन सब खाना, तामें तख्त सुभानी[3] ॥ ३ ॥
बिना आब[4] जहँ बहु गुल फूले, अब्र[5] बिना जहँ बरसै।
हूर बिना सरोद[6] सब बाजे, चस्म बिना सब दरसै ॥ ४ ॥
ता दरगाह मुसल्ला डारे, बैठा कादिर काजी।
न्याव करै सीने की जानै, सब को राखै राजी ॥ ५ ॥
जो देखै तो कमला होवै, तब कमाल पद पावै।
साहेब मिलि तब साहिब होवै, ज्यों जल बूँद समावै ॥ ६ ॥
तिस के पल[7] दीदार किये तैं, नादिर होय फकीरा।
मारे काल कलंदर दिल सौं, दरदमंद धर धीरा ॥ ७ ॥
ऐसा होय तब पीर कहावै, मनी मान जब खोवै।
तब मलूक रोसन-जमीर होय, पाँव पसारे सोवै ॥ ८ ॥

॥ शब्द २ ॥

अवधू का कहि तोहि बखानों।
गगन मँडल में अनहद बोलै, जाति बरन नहिँ जानौं ॥ १ ॥
अहो अहो मैं कहा कहों तोहि, नाँव न जानौं देवा।
सुन्न महल की जुगती बतावे, केहि बिधि कीजे सेवा ॥ २ ॥

---

(१) सूरज और चाँद। (२) आशा, तृष्णा और अहंकार। (३) मालिक। (४) पानी। (५) बादल। (६) राग। (७) छिन मात्र।

तीरथ भरमें यड़े कहावैं, बाद करत हैं सोई ।
अंधधुंध चलजात निरंजन, मर्म न जानै कोई ॥ ३ ॥
अविगत गति तुम्हरी अविनासी, घट घट रहत चलाया ।
जहाँ तहाँ तेरी माया खोलै, सतगुरु मोहिँ लखाया ॥ ४ ॥
वेद पढ़े पढ़ि पंडित भूले, ज्ञानी कथि कथि ज्ञाना ।
कह मलूक तेरी अद्भुत लीला, सो काहू नहिँ जाना ॥ ५ ॥

विनती

॥ शब्द १ ॥

अब तेरी शरन आयो राम ॥ १ ॥
जबै सुनिया साध के मुख, पतित-पावन नाम ॥ २ ॥
यही जान पुकार कीन्ही, अति सतायो काम ॥ ३ ॥
विषय सेती भयो आजिज[1], कह मलूक गुलाम ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

साँचा तू गोपाल, साँच तेरा नाम है ।
जहवाँ सुमिरन होय, धन्य सो ठाम है ॥ १ ॥
साँचा तेरा भक्त, जो तुझको जानता ।
तीन लोक को राज, मनै नहिँ आनता ॥ २ ॥
झूठा नाता छोड़ि, तुझे लव लाइया ।
सुमिरि तिहारो नाम, परम पद पाइया ॥ ३ ॥
जिन यह लाहा[2] पायो, यह जग आइ कै ।
उतरि गयो भव पार, तेरो गुन गाइ कै ॥ ४ ॥
तुही मातु तुही पिता, तुही हितु बंधु है ।
कहत मलूकादास, बिना तुझ धुंध[3] है ॥ ५ ॥

---

(१) लाचार । (२) लाभ । (३) अँधियारा ।

॥ शब्द ३ ॥

एक तुम्हैं प्रभु चाहौं राज ॥ टेक ॥
भूपति रंक सेंति[1] नहिं पूछौं, चरन तुम्हार सँवारयो काज ॥१॥
पाँचो पंडव जरत उबारयो, द्रुपद सुता को राख्यो लाज ॥२॥
संत-बिरोधी ऐसो मारो, ज्यों तीतर पर छूटे बाज ॥३॥
तुम्हैं छोड़ि जाने जो दूजा, तेहि पापी पर परि है गाज ॥४॥
कहैं मलूक मेरो प्रान रमइया, तीन लोक ऊपर सिरताज ॥५॥

प्रेम

॥ शब्द १ ॥

कौन मिलावै जोगिया हो, जोगिया बिन रह्यो न जाय ॥टेक॥
मैं जो प्यासो पीव की, रटत फिरौं पिउ पीव ।
जो जोगिया नहिं मिलिहै हो, तो तुरत निकासूँ जीव ॥ १ ॥
गुरुजी अहेरी मैं हिरनी, गुरु मारैं प्रेम का बान ।
जेहि लागै सोई जानई हो, और दरद नहिं जान ॥ २ ॥
कहैं मलूक सुनु जोगिनी रे, तनहिं में मनहिं समाय ।
तेरे प्रेम के कारने जोगी, सहज मिला मोहिं आय ॥ ३ ॥

॥ शब्द २ ॥

तेरा मैं दीदार-दिवाना ।
घड़ी घड़ी तुझे देखा चाहूँ, सुन साहेब रहमाना ॥ १ ॥
हुआ अलमस्त खबर नहिं तन की, पिया प्रेम पियाला ।
ठाढ़ होउँ तो गिर गिर परता, तेरे रँग मतवाला ॥ २ ॥
खड़ा रहूँ दरबार तुम्हारे, ज्यों घर का बंदाजादा[2] ।
नेकी की कुलाह[3] सिर दीये गले पैरहन[4] साजा ॥ ३ ॥

---

(१) मुक्त । (२) गुलाम । (३) टोपी । (४) मेखली ।

तौजी और निमाज न जानूँ, ना जानूँ धरि रोजा ।
बाँग जिकर[1] तबही से बिसरी, जबसे यह दिल खोजा ॥ ४ ॥
कहैं मलूक अब कजा[2] न करिहौं, दिल ही सों दिल लाया ।
मक्का हज्ज हिये में देखा, पूरा मुरसिद पाया ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

दर्द-दिवाने बावरे, अलमस्त फकीरा ।
एक अकीदा[3] लै रहे, ऐसे मन-धीरा ॥ १ ॥
प्रेम पियाला पीवते, बिसरे सब साथी ।
आठपहर यों झूमते, ज्यों माता हाथी ॥ २ ॥
उनकी नजर न आवते, कोइ राजा रंक ।
बंधन तोड़े मोह के, फिरते निहसंक ॥ ३ ॥
साहेब मिल साहेब भये, कछु रही न तमाई[4] ।
कहैं मलूक तिस घर गये, जहँ पवन न जाई ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

मेरा पीर निरंजना, मैं खिजमतगार ।
तुहीं तुहीं निस दिन रटौं, ठाढ़ा दरबार ॥१॥
महल मियाँ का दिलहिं में, औ महजिद काया ।
छूरी देता ज्ञान की, जबतें लौ लाया ॥२॥
तसबी फेरौं प्रेम की, हिया करौं निवाज ।
जहँ तहँ फिरौं दिदार को उसही के काज ॥३॥
कहैं मलूक अलेख के, अब हाथ बिकाना ।
नाहीं खबर वजूद[5] की मैं फकीर दिवाना ॥४॥

(१) सुमिरन । (२) छूटी हुई नमाज़ पढ़ना । (३) प्रतीत । (४) इच्छा, चाह । (५) आपा, शरीर ।

॥ शब्द ५ ॥

अब की लगी खेप हमारी ।
लेखा दिया साह अपने को, सहजै चीठी फारी ॥ १ ॥
सौदा करत बहुत जुग बीते, दिन दिन टूटी आई ।
अब की बार बेबाक भये हम, जम की तलब छोड़ाई ॥ २ ॥
चार पदारथ नफा भया मोहिँ, बनिजै कबहुँ न जइहौँ ।
अब डहकाय बलाय हमारी, घर ही बैठे खइहौँ ॥ ३ ॥
बस्तु अमोलक गुप्तै पाई, ताती बायु न लाओँ ।
हरि हीरा मेरा ज्ञान जौहरी, ताही सोँ परखाओँ ॥ ४ ॥
देव पितर औ राजा रानी, काहू से दीन न भाखौँ ।
कहत मलूक मेरे रामै पूँजी, जीव बराबर राखौँ ॥ ५ ॥

भक्त महिमा

॥ शब्द १ ॥

सोई सहर सुबस बसे, जहँ हरि के दासा ।
दरस किये सुख पाइये, पूजे मन आसा ॥ १ ॥
साकट के घर साधजन, सुपने नहिँ जाहीँ ।
तेइ तेइ नगर उजाड़ है, जहँ साधू नाहीँ ॥ २ ॥
मूरत पूजैँ बहुत मति, नित नाम पुकारैँ ।
कोटि कसाई तुल्य हैँ, जो आतम मारैँ ॥ ३ ॥
पर दुख दुखिय भक्त है, सो रामहिँ प्यारा ।
एक पलक प्रभु आप तेँ, नहिँ राखैँ न्यारा ॥ ४ ॥
दीन-बंधु करुना-मयी, ऐसे रघुराजा ।
कहैँ मलूक जन आपने को, कौन निवाजा ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

देव पितर मेरे हरि के दास । गाजत हौं तिन के बिस्वास ॥१॥
साधू जन पूजौं चित लाई । जिनके दरसन हिया जुड़ाई ॥२॥
चरन पखारत होइ अनंदा । जन्म जन्म के काटे फंदा ॥३॥
भाव भक्ति करते निस्काम । निसि दिन सुमिरैं केवल राम ॥४॥
घर वन का उनके भय नाहीं । ज्यों पुरइनि रहता जल माहीं ॥५॥
भूत परेतन देंव बहाई । देवखर लीपै मोर बलाई ॥६॥
वस्तु अनूठी संतन लाऊँ । कहैं मलूक सब भर्म नसाऊँ ॥७॥

मन और माया के चरित्र

॥ शब्द १ ॥

माया काली नागिनी, जिन डसिया सब संसार हो ॥टेक॥
इन्द्र डसा ब्रह्मा डसा, डसिया नारद ब्यास ।
वात कहत सिव को डसा, जेहि घरि एक[1] वैठे पास हो ॥ १ ॥
कंस डसा सिसुपाल डसा, उन रावन डसिया जाय ।
दस सिर दै लंका मिली, सो छिन में दई वहाय हो ॥ २ ॥
वड़े वड़े गारुड़[2] डसे, कोउ इक थिर न रहाय ।
कच्छ[3] देस गोरख डसा, जा का अगम बिचार हो ॥ ३ ॥
चुनि चुनि खाये सूरमा, जा की करै जग आस ।
हम से गरीवन को गनै, कहत मलूकादास हो ॥ ४ ॥

(१) घड़ी भर । (२) साँप के विष उतारने का मंत्र जानने वाले । (३) गोरखनाथ की जन्म भूमि ।

॥ शब्द २ ॥

माया प्रपंच यह पंच रचा ॥ टेक ॥
आसा तृष्ना सब घट ब्यापी, मुनि गंधर्व कोई न बचा ॥१॥
उठे बिहान पेट का धंधा, माया लाय किया जग अंधा ॥२॥
तन मन छीन कुटुंबे लाया, छिप रही आप लोग भर्माया ॥३॥
औंधी खोपरी फिरैं बिचारे, भूले भक्ति छुधा के मारे ॥४॥
बिनती करत मलूकादासा, थकित भया तेरा देख तमासा ॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

राम नाम क्यों लीजे मन राजा ।
काहु भाँति मेरे हाथ न आवे, महा बिकट दल साजा ॥ १ ॥
कई बार इन पैंड़े चलते, लस्कर लूटा मेरा ।
चहुँ जुग राज बिराजी करता, अदब न मानै तेरा ॥ २ ॥
येही सब घट दुन्द मचावे, मारै रैयत खासी ।
काहू नृप को नजर न आवै, एते मान मवासी ॥ ३ ॥
कह मलूक जिय ऐसी आवै, छल बल करि येही गहिये ।
इसहि मार काया गढ़ लेके, तब खासे घर रहिये ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

हम से जनि लागे तू माया ।
थोरे से फिर बहुत होयगी, सुनि पैहैं रघुराया ॥ १ ॥
अपने में है साहेब हमरा, अजहूँ चेतु दिवानी ।
काहू जन के बस परि जैहो, भरत मरहुगी पानी ॥ २ ॥
तर है चितै[1] लाज करु जन का, डारु हाथ की फाँसी ।
जन तें तेरो जोर न लहिहै[2], रच्छपाल अबिनासी ॥ ३ ॥

---

(१) नीची निगाह कर देख । (२) चलेगा ।

कहै मलूका चुप करु ठगनी, औगुन राखु दुराई।
जो जन उबरै राम नाम कहि, तातैं कछु न बसाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

माया के गुलाम, गीदी क्या जानैं बंदगी ॥ टेक ॥
साधुन से धूम धाम, करत चोरन के काम।
द्विजन को पूजा देयँ, गरीबन से रिन्दगी ॥ १ ॥
कपट को माला लिये, छापा मुद्रा तिलक दिये।
बगल में पोथी दाबे, लायो फरफंदगी ॥ २ ॥
कहत मलूकदास, छोड़ु दगाबाजी आस।
भजहु गोबिन्द राय, मेटैं तेरी गंदगी ॥ ३ ॥

॥ चेतावनी ॥

॥ शब्द १ ॥

जा दिन का डर मानता, सोइ बेला आई।
भक्ति न कीन्ही राम की, ठकमूरी[1] खाई ॥ १ ॥
जिन के कारन पचि मुवा, सब दुख की रासी।
रोइ रोइ जन्म गँवाइया, परी मोह की फाँसी ॥ २ ॥
तन मन धन नहिँ आपना, नहिँ सुत औ नारी।
बिछुरत बार न लागई, जिय देखु बिचारी ॥ ३ ॥
मनुष जन्म दुर्लभ अहै, बड़े पुन्न पाया।
सोऊ अकारथ खोइया, नहिँ ठौर लगाया ॥ ४ ॥
साध सँगत कब करोगे, यह औसर बीता।
कहै मलूका पाँच में, बैरी एक न जीता ॥ ५ ॥

---

(१) चकचौंधी, हवास पैंतरे हो जाना।

॥ शब्द २ ॥

राम मिलन क्योँ पइये, मोहिं राखा ठगवन घेरि हो ॥
क्रोध तो काला नाग है, काम तो परघट काल ।
आप आप को खैँचते, मोहिं कर डाला बेहाल हो ॥ १ ॥
एक कनक और कामिनी, यह दोनोँ बटपार ।
मिसरी की छुरी गर लाय के, इन मारा सब संसार हो ॥ २ ॥
इन में कोई ना भला, सब का एक बिचार ।
पैँड़ा मारैँ भजन का, कोइ कैसे के उतरै पार हो ॥ ३ ॥
उपजत बिनसत थकि पड़ा, जियरा गया उकताय ।
कहैँ मलूक बहु भरमिया, मो पै अब नहिं भरमो जाय हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

इन्द्री, खाय गई जग सारा ।
निस दिन चरा करे बन काया, कोई न हाँकनहारा ॥ १ ॥
पीप रक्त करै तन झंझरा, सरबस जाय नसाई ।
जैसी भाँति काठ घुन लागे, बहुरि रहै फोकलाई[1] ॥ २ ॥
होता बीज औँट के लोहू, सो देँही का राजा ।
ऐसी बस्तु अकारथ खोवै, अपना करै अकाजा ॥ ३ ॥
मनुवा मार भजे भगवंतहिँ, या मति कबहुँ न ठाना[2] ।
जियरा दोय घरी के सुख को, कहत मलूक दिवाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

अजब तमासा देखा तेरा । ता तेँ उदास भया मन मेरा ॥१॥
उतपति परलय नित उठ होई । जग में अमर न देखा कोई ॥२॥
माटी के पुतरे माया लाई । कोइ कहे बहिन कोई कहे भाई ॥३॥

---

(१) छिलका । (२) दृढ़ किया ।

झूठा नाता लोग लगावै । मन मेरे परतीत न आवै ॥४॥
जबहीं भेजे तबहिं बुलावै । हुकुम भया कोइ रहन न पावै ॥५॥
उलटत पलटत जगकी अँचली[1] । जैसे फेरै पान तमोली ॥६॥
कहत मलूक रह्यो मोहिं घेरे । अब माया के जाउँ न नेरे ॥७॥

॥ शब्द ५ ॥

देखा सब जग ब्याकुल राम । नित उठि दगधै क्रोध औ काम ॥१॥
तुम तो प्रभु जी रहे छिपाय । पाँच मवासी दियो लगाय ॥२॥
एक घड़ी काहु कल ना देय । ज्ञान ध्यान आपुइ हरि लेय ॥३॥
देँह धरे का बड़ा जँजाल । जहँ तहँ फिरता गिरसे काल ॥४॥
आई अचानक करत घात । जिव लै भागत कहत बात ॥५॥
या पापी तें कोउ न बाच । नित उठि पेट नचावै नाच ॥६॥
या का उत्तर देवो मोहिं । कैसे के कोउ मिलै तोहिं ॥७॥
जियत नरक है गर्भ बास । उपजत बिनसत बड़ो त्रास ॥८॥
कह मलूक यह बिनती मोरी । इन्हें छोड़ि चल जाऊँ तोरी ॥९॥

॥ शब्द ६ ॥

बाबा मुरदे मूँड़ उठाया ।
लागी अंग बाय दुनियाँ की, राम राय बिसराया ॥१॥
आये पहिरि करम की बेड़ी, हाथ हाथ करि गाढ़ी ।
फूले फिरैं जनु अमर भये हैं, प्रीति बिषय सों बाढ़ी ॥२॥
काहू के मन चार पाँच की, काहू के मन बीस ।
काहू के मन सात आठ की, सब बाँधे जगदीस ॥३॥
अब भये सौतिन[2] हाथ केरे, घर बीघा[3] सो कीन्ह ।
मेरी मेरी कहि उमर गँवाई, कबहुँ राम ना चीन्ह ॥४॥

---

(१) आँचल । (२) माया । (३) बिगहा ।

दिना चार के घोड़े सोड़े, दिना चार के हाथी।
कहत मलूका दिना चार में, बिछुरि जायँगे साथी॥ ५॥

॥ शब्द ७॥

मुवा सकल जग देखिया, मैं तो जियत न देखा कोय हो ॥टेक
मुवा मुई को ब्याहता रे, मुवा ब्याह करि देय।
मुए बराते जात हैं, एक मुवा बधाई लेय हो॥ १॥
मुवा मुए से लड़न को, मुवा जोर ले जाय।
मुरदे मुरदे लड़ि मरे, एक मुरदा मन पछिताय हो॥ २॥
अंत एक दिन मरोगे रे, गलि गुलि जैहै चाम।
ऐसी झूठी देह तें, काहें लेव न साँचा नाम हो॥ ३॥
मरने मरना भाँति है रे, जो मरि जानै कोय।
राम दुआरे जो मरै, फिर बहुरि न मरना होय हो॥ ४॥
इनकी यह गति जानिके, मैं जहँ तहँ फिरौं उदास।
अजर अमर प्रभु पाइया, कहत मलूकादास हो॥ ५॥

॥ शब्द ८॥

सोते सोते जन्म गँवाया।
माया मोह में सानि पड़ो सो, राम नाम नहिं पाया॥ १॥
मीठी नींद सोये सुख अपने, कबहूँ नहिं अलसाने।
गाफिल होके महल में सोये, फिर पाछे पछिताने॥ २॥
अजहूँ उठो कहाँ तुम बैठे, बिनती सुनो हमारी।
चहूँ ओर में आहट पाया, बहुत भई भुइँ भारी॥ ३॥
बंदीछोर रहत घट भीतर, खबर न काहू पाई।
कहत मलूक राम के पहरा, जागो मेरे भाई॥ ४॥

॥ शब्द ९ ॥

अवधू याही करो बिचार ।
दस औतार कहाँ तें आये, किन रे गढ़े करतार ॥ १ ॥
केहि उपदेस भये तुम जोगी, केहि बिधि आतम जारा ।
केहि कारन तुम काया सताई, केहि बिधि आतम मारा ॥ २ ॥
थोथे बाँट बाँधि के भोंदू, येहि बिधि जाव न पारा ।
ऋद्धि सिद्धि में बूड़ि मरोगे, पकड़ो खेवनहारा ॥ ३ ॥
अगल बगल का पैंड़ा पकड़ा, दिन दिन चढ़ता भारा ।
कहत मलूक सुनो रे भोंदू, अबिगत मूल बिसारा ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

नाम हमारा खाक है, हम खाकी बंदे ।
खाकहिँ ते पैदा किये, अति गाफिल गंदे ॥ १ ॥
कबहुँ न करते बन्दगी, दुनिया में भूले ।
आसमान को ताकते, घोड़े चढ़ि फूले ॥ २ ॥
जोरू लड़के खुस किये, साहेब बिसराया ।
राह नेकी की छोड़ि के, बुरा अमल कमाया ॥ ३ ॥
हरदम तिस को याद कर, जिन वजूद सँवारा ।
सबै खाक दर खाक है, कुछ समुझ गँवारा ॥ ४ ॥
हाथी घोड़े खाक के, खाक खानखानी[1] ।
कहैँ मलूक रहि जायगा, औसाफ निसानी ॥ ५ ॥

---

(१) बादशाहत ।

॥ उपदेश ॥

॥ शब्द १ ॥

अब तो अजपा जपु मन मेरे ॥ टेक ॥
सुर नर असुर टहलुवा जा के, मुनि गंधर्ब जा के चेरे ॥१॥
दस औतार देखि मत भूलो, ऐसे रूप घनेरे ॥२॥
अलख पुरुष के हाथ बिकाने, जब तें नैन निहारे ॥३॥
अविगत अगम अगोचर अबधू, संग फिरत हैं तेरे ॥४॥
कह मलूक तू चेत अचेता, काल न आवै नेरे ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

ऐ अजीज ईमान तू, काहे को खोवै ।
हिय राखे दरगाह में, तो प्यारा होवै ॥ १ ॥
यह दुनिया नाचीज के, जो आसिक होवै ।
भूले जात खोदाय को, सिर धुन धुन रोवै ॥ २ ॥
इस दुनियाँ नाचीज के, तालिब हैं कुत्ते ।
लज्जत में मोहित हुए, दुख सहे बहूते ॥ ३ ॥
जब लगि अपने आप को, तहकीक न जानै ।
दास मलूका रब्ब को, क्योंकर पहिचानै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

साधो भाई अपनी करनी नाहीं ॥ टेक ॥
जे करनी का करैं भरोसा, ते जम के घर जाहीं ॥ १ ॥
ना जानूँ धौ कहाँ मुए थे, ना जानूँ कहँ आये ।
ना जानूँ हरि गर्भ बसेरा, कौने भाँति बनाये ॥ २ ॥
महा कठिन यह हरि की माया, या तें कौन बचावै ।
जौन कहै जड़ मूलहिँ त्यागी, तिन का हाथ लगावै ॥ ३ ॥

यह संसार बड़ो भौसागर, प्रलय काल ते भारी।
बूड़त तें या सोई बाचे, जेहि राखै करतारी ॥ ४ ॥
लच्छ गऊ दे अन्न खात थे, राजा नृग से प्यारे।
पुन्न करत जमा और गँवाई, लै गिरगिट कै डारे ॥ ५ ॥
गौतम नारि बड़ी पतिबरता, बहुते कीन्हे दाना।
करनी करि बैकुंठ न पैठी, काहे भई पषाना ॥ ६ ॥
नारद मान छेम करि बैठो, छोड़ो गर्ब गुमाना।
आपा मेटो राम भजो तुम, कहत मलूक दिवाना ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥

आपा खोज रे जिय भाई।
आपा खोजे त्रिभुवन सूझै, अंधकार मिटि जाई ॥ १ ॥
जोई मन सोई परमेसुर, कोइ बिरला अवधू जानै।
जौन जोगीसुर सब घट व्यापक, सो यह रूप बखानै ॥ २ ॥
सब्द अनाहद होत जहाँ तें, तहाँ ब्रह्म कर बासा।
गगन मँडल में करत कलोलै, परम जोति परगासा ॥ ३ ॥
कहत मलूका निरगुन के गुन, कोइ बड़भागी गावै।
क्या गिरही औ क्या बैरागी, जेहि हरि देयँ सो पावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

किरपा कर गुरु जुगत बताई। आपा खोजो भरम नसाई ॥१॥
आपा खोजे त्रिभुवन सूझै। गुरु परताप काल से जूझै ॥२॥
सब्द ब्रह्म का करै बिचार। सोई चलै जियत होइ छार ॥३॥
संतन की सेवा चित लावै। पाहन पूजि न मन भरमावै ॥४॥
कामिनि कनक कलह का भंडा। इन ठगनिन सारा जग डंडा ॥५॥
होत न हँसै मरत ना रोवै। ता को रंड कबहुँ न बिगोवै ॥६॥
परम तत्त जो दृढ़ कर रहै। माया मोह में कबहुँ न बहै ॥७॥

॥ शब्द १० ॥

मन तैँ इतने भरम गँवावो ।
चलत बिदेस बिप्र जनि पूछो, दिन का दोष न लावो ॥ १ ॥
संझा होय करो तुम भोजन, बिनु दीपक के बारे ।
जौन कहैँ असुरन की बेरिया, मूढ़ दई के मारे ॥ २ ॥
आप भले तो सबहि भलो है, बुरा न काहू कहिये ।
जा के मन कछु बसे बुराई, ता सोँ भागे रहिये ॥ ३ ॥
लोक बेद का पैँडा औरहि, इनकी कौन चलावै ।
आतम मारि पषानै पूजैँ, हिरदै दया न आवै ॥ ४ ॥
रहो भरोसे एक राम के, सूरे का मत लीजै ।
संकट पड़े हरज नहिँ मानो, जिय का लोभ न कीजै ॥ ५ ॥
किरिया करम अचार भरम है, यही जगत का फंदा ।
माया जाल मेँ बाँधि अँड़ाया[1], क्या जानै नर अंधा ॥ ६ ॥
यह संसार बड़ा भौसागर, ता को देखि सकाना[2] ।
सरन गये तोहिँ अब क्या डर है, कहत मलूक दिवाना ॥ ७ ॥

॥ शब्द ११ ॥

है हज़ूर नहिँ दूर, हमा-जा भर पूर ।
ज़ाहिरा जहान, जा का जहूर पुर नूर ॥ १ ॥
बेसबूह बेनमून, बेचगून ओस्त ।
हमा ओस्त हमा अज़ोस्त, जान-जानाँ दोस्त ॥ २ ॥
शबो रोज़ ज़िकर, फ़िक्ररही मेँ मशगूल ।
तेही दरगाह बीच, पड़े हैँ कबूल ॥ ३ ॥
साहेब है मेरा पीर, क़ुदरत क्या कहिये ।
कहता मलूक बंदा, तक पनाह रहिये ॥ ४ ॥

---

(१) गिराया । (२) डरा ।

॥ शब्द १२ ॥

राम कहो राम कहो राम कहो बावरे।
अवसर न चूक भोंदू, पायो भला दाँव रे ॥ १ ॥
जिन तो को तन दीन्हो, ता को न भजन कीन्हो।
जनम सिरानो जात, लोहे कैसो ताव रे ॥ २ ॥
रामजी को गाय गाय, रामजी को रिझाव रे।
रामजी के चरन कमल, चित्त माहिँ लाव रे ॥ ३ ॥
कहत मलूकदास, छोड़ दे तैँ झूठी आस।
आनँद मगन होइ के, हरि गुन गाव रे ॥ ४ ॥

॥ शब्द १३ ॥

रस रे निर्गुन राग से, गावै कोइ जाग्रत जोगी।
अलग रहै संसार से, सो (इस) रस का भोगी ॥ १ ॥
भरम करम सब छाँड़, अनूठा यह मत पूरा।
सहजे धुन लागी रहै, बाजै अनहद तूरा ॥ २ ॥
लहरैँ उठतीँ ज्ञान की, बरसै रिमझिम मोती।
गगन गुफा में बैठ के, देखै जगमग जोती ॥ ३ ॥
सिव नगरी आसन किया, सुन ध्यान लगाया।
तीनोँ दसा बिसार के, चौथा पद पाया ॥ ४ ॥
अनुभय उपजा भय गया, हद तज बेहद लागा।
घट उँजियारा होइ रहा, जब आतम जागा ॥ ५ ॥
सब रँग खेलै सम रहै, दुविधा मनहिँ न आनै।
कह मलूक सोइ रावला, मेरे मन मानै ॥ ६ ॥

॥ शब्द १४ ॥

बाजीगरे पसारी बाजी। भूल भुलायो सब का जी ॥ १
देखा मैँ मुल्ला बौराना। नाहक पढ़े किताब कुराना ॥ २

है हजूर वह दूर बतावै । बाँग जिकिर धौं किसे सुनावै ॥३॥
रोजा करै निमाज गुजारै । उरुस[1] करै और आतम मारै ॥४॥
वो भी मुल्ला बड़ा कसाई । जिन तुझको तदबीर सिखाई ॥५॥
है बेपीर औ पीर कहावै । करि मुरीद तदबीर सिखावै ॥६॥
ऐसा मुर्सिद कबहुँ न करिये । खून करावै तिस तें डरिये ॥७॥
अपने मूड़ अजाब चढ़ावै । पैगम्बर का धोखा लावै ॥८॥
ऐसा मुर्सिद करै जो कोई । दोजख जाय परैगा सोई ॥९॥
दरदमंद दुरवेस कहावै । जो मोहिं राम की रीझ बतावै ॥१०॥
साहेब को बैठे लौ लाई । काहू की नहि करै तमाई[2] ॥११॥
पाँच तत्त से रहै नियारा । सो दुर्वेस खोदा का प्यारा ॥१२॥
जो प्यासे को देवै पानी । बड़ी बंदगी मोहमद मानी ॥१३॥
जो भूखे को अन्न खवावै । सो सिताब[3] साहेब को पावै ॥१४॥
ने मन तदबीर कराई । साहेब के दर होय बड़ाई ॥१५॥
फकीर ऐसा कोइ होय । फिरै बेबाक न पूछे कोय ॥१६॥
ड़ै गुस्सा जीवत मरै । तेहिं इजराइल सिजदा करै ॥१७॥
अपना सा दुख सब का जानै । दास मलूका ता को मानै ॥१८॥

॥ मिश्रित ॥

॥ शब्द १ ॥

अब मैं अनुभव पदहिं समाना ॥ टेक ॥
सब देवन को भर्म भुलाना, अविगति हाथ बिकाना ॥ १ ॥
पहिला पद है देई देवा, दूजा नेम अचारा ।
तीजे पद में सब जग बंधा, चौथा अपरम्पारा ॥ २ ॥
सुन्न महल में महल हमारा, निरगुन सेज बिछाई ।
चेला गुरु दोउ सैन करत हैं, बड़ी असाइस[1] पाई ॥ ३ ॥
एक कहै चल तीरथ जइये, (एक) ठाकुरद्वार बतावै ।
परम जोति के देखे संतो, अब कछु नजर न आवै ॥ ४ ॥
आवा गवन का संसय छूटा, काटी जम की फाँसी ।
कह मलूक मैं यही जानिके, मित्र कियो अबिनासी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

सबहिन के हम सबै हमारे । जीव जंतु मोहिं लगैं पियारे ।१।
तीनों लोक हमारी माया । अंत कतहुँ से कोइ नहिं लाया ।२।
छत्तिस पवन हमारी जात । हमहीं दिन और हमहीं रात ।३।
हमहीं तरवर कीट पतङ्गा । हमहीं दुर्गा हमहीं गंगा ।४।
हमहीं मुल्ला हमहीं काजी । तीरथ बरत हमारी बाजी ।५।
हमहीं पंडित हमीं बैरागी । हमहीं सूम हमीं हैं त्यागी ।६।
हमहीं देव औ हमहीं दानौ । भावै जा को जैसा मानौ ।७।
हमहीं चोर हमहीं बटपार । हम ऊँचे चढ़ि करैं पुकार ।८।
हमहिं महावत हमहीं हाथी । हमहीं पाप पुन्न के साथी ।९।
हमहिं अस्व[2] हमहीं असवार । हमहिं दास हमहीं सरदार ।१०।

---

(१) आसाइश, आराम । (२) घोड़ा ।

हमहीँ सूरज हमहीँ चंदा। हमहीँ भये नन्द के नन्दा।११।
हमहीँ दसरथ हमहीँ राम। हमरै क्रोध हमारै काम।१२।
हमहीँ रावन हमहीँ कंस। हमहीँ मारा अपना बंस।१३।
हमहिँ जियावैँ हमहीँ मारैँ। हमहीँ बोरैँ हमहीँ तारैँ।१४।
जहाँ तहाँ सब जोति हमारी। हमहिँ पुरुष हमहीँ है नारी।१५।
ऐसी बिधि कोई लव लावै। सो अविगत से टहल करावे।१६।
सहै कुसब्द और सुमिरै नाँव। सब जग देखै एकै भाव।१७।
या पद का कोइ करै निबेरा। कह मलूक मैँ ता का चेरा।१८।

॥ शब्द ३ ॥

बाबा मन का है सिर तले ॥ टेक ॥
माया के अभिमान भूले, गर्व ही मेँ गले ॥ १ ॥
जिभ्या कारन खून कीये, बाँधि जमपुर चले ॥ २ ॥
रामजी सोँ भये बेमुख, अगिन अपनी जले ॥ ३ ॥
हरि भजे से भये निरभय, टारहू नहिँ टरे ॥ ४ ॥
कह मलूका जहँ गरीबी, तेई सब से भले ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

तू साहेब लीये खड़ा, बन्दा नासबूरा।
जैसा जिसको चाहिये, देता भरपूरा ॥ १ ॥
लाख करोड़ जो गाँठि में, तौ भी यह रोवै।
मरता मारे फिकिर के, सुख कबहुँ न सोवै ॥ २ ॥
आँखैँ फेरै बुरी भाँति, देखत डर लागै।
लेखा जो कौड़ी चले, दिन चारक लागै ॥ ३ ॥
बिन संतोष दुखी भया, बहुते भरमाया।
कहत मलूक यह जानकर, सरनागति आया ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

राम मैं ससा भयो तन धरि के।
प्रभु की सरन मैं कीन्ह बिलावट आनि घुसा मैं डरिके ॥ १ ॥
कुकरा पाँच पचीस कुकरिया सदा रहैं मोहिं घेरे।
ठाढ़ होउँ तौ पिंडुरो पकरैं बैठे आँखि गुरेरैं ॥ २ ॥
कलुवा कबरा मोतिया झबरा बुचवा मोहिं डेरवावे।
जब तें लियो तिहारो पोछा कोऊ निकट न आवे ॥ ३ ॥
इन पाँचो में देखा बिष ही एकौ नहिं मन माना।
काटि काटि मैं कीन्ह अहेरा कहत मलूक दिवाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

बन्दे दुनियाँ को दीन गँवाया[1] ।
सो दुनियाँ तेरे संग न लागो, मूड़ अजाब चढ़ाया ॥ १ ॥
करम जो लागा बदी खलक की, किन तुझको फर्माया।
गुनहगार तूँ हुआ सरासर, दोजख बाँध चलाया ॥ २ ॥
खाक सेती जिन पैदा कीन्हा, सो साहेब बिसराया।
सोहकम[2] मार पड़ी गुरजन की, तब कछु ज्वाब न आया॥ ३ ॥
अब किसहूँ को दोष न दीजे, गंदा अमल कमाया।
कह मलूक जस खिजमत पहुँचा, सोई नतीजा पाया ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

मन नहिं तौले यार, का रे तौलै बनियाँ ॥ टेक ॥
घाट बाट सोध लेइ, सम रहै नकुनियाँ[3] ।
बिसरै ना सुरति, नाहिं फेरि होय तनियाँ ॥ १ ॥

---

(१) स्वार्थ के लिये परमार्थ खोया। (२) भारी (३) डंडी के सिरे।

पाँच औ पचीस चोर लूटिहैं दुकनियाँ।
सुनहि ना गोहार कोउ, हाकिम हैरनियाँ ॥ २ ॥
कहत मलूकदास, तौलै जब चार रास।
साहेब मिल साहु होय, मिलै तब दमनियाँ[1] ॥ ३ ॥

॥ शब्द ८ ॥

दीन-बंधु दीना-नाथ मेरी तन हेरिये ॥ टेक ॥
भाई नाहिँ बन्धु नाहिँ कुटुम परिवार नाहिँ,
ऐसा कोई मित्र नाहिँ जाके ढिग जाइये ॥ १ ॥
सोने की सलैया नाहिँ रूपे का रुपैया नाहिँ,
कौड़ी पैसा गाँठ नहीँ जासे कछु लीजिये ॥ २ ॥
खेती नाहिँ बारी नाहिँ बनिज ब्यौपार नाहिँ,
ऐसा कोई साहु नाहिँ जासोँ कछु माँगिये ॥ ३ ॥
कहत मलूकदास छोड़दे पराई आस,
राम धनी पाय के अब का की सरन जाइये ॥ ४ ॥

कबित्त

(१)

परम दयाल राया राय परसोत्तम जी,
ऐसो प्रभु छाँड़ि और कौन के कहाइये ॥ १ ॥
सीतल सुभाव जा के तामस को लेस नहीँ,
मधुर बचन कहि राखै समझाइये ॥ २ ॥

---

(१) दाम।

भक्त-बछल गुन-सागर कला-निधान,
जाको जस पाँत नित बेदन में गाइये ॥ ३ ॥
कहत मलूक बल जाउँ ऐसे दरस की,
अधम-उधार जा के देखे सुख पाइये ॥ ४ ॥

(२)

जौन कोई भूखा गोपाल की मोहब्बत का।
तौन दुर्वेसन का पैंड़ा निराला है ॥ १ ॥
रहते महजूज[1] वे तो साहेब की सूरत पर।
दुनियाँ को तर्क[2] मार दीन को सम्हाला है ॥ २ ॥
किसी से न करैं स्वाल उनका कुछ और ख्याल।
फिरते अलमस्त वजूद[3] भी बिसारा है ॥ ३ ॥
कहता मलूक उन्हें सूझता है बेचुगून[4]।
किसी की गरज नहीं अन्दर अँधियारा है ॥ ४ ॥

(३)

माला कहाँ औ कहाँ तसबीह,
अब चेत इनहिं कर टेक न टेकै ॥ १ ॥
काफिर कौन मलेच्छ कहावत,
संध्या निवाज समय करि देखै ॥ २ ॥
है जमराज कहाँ जबरील है,
काजी है आप हिसाब के लेखै ॥ ३ ॥
पाप औ पुन्य जमा कर बूझत,
देत हिसाब कहाँ धरि फेकै ॥ ४ ॥
दास मलूक कहा भरमौ तुम,
राम रहीम कहावत एकै ॥ ५ ॥

---

(१) पगे हुए। (२) त्याग कर। (३) देह। (४) बेचून। (५) बेमिस्ल।

(४)

माला कहाँ और कहाँ तसबीह,
अब चेत इनहिँ कर टेक न टेकी ॥ १ ॥
बाँधे डोल अकास पताल लौं,
भूलन जात कहे हरि सेती ॥ २ ॥
लोक की लाज में होत अकाज है,
कौन सहै मेरे साँसत एती ॥ ३ ॥
दास मलूक दिन दुइ की बात है,
पायो राम छुट्यो जम सेती ॥ ४ ॥

(५)

बीर रघुबीर पैगम्बर खोदा मेरे,
कादिर करीम काजी माया मत खोई है ॥ १
राम मेरे प्रान रहमान मेरे दीन इमान,
भूल गयो भैया सब लोक लाज धोई है ॥ २
कहत मलूक मैं तो दुबिधा न जानौं दूजी,
जोई मेरे मन में नैनन में सोई है ॥ ३ ॥
हरि हजरत मोहिँ माधव मकुन्द की सौं,
छाँड़ि केसवराय मेरो दूसरो न कोई है ॥ ४ ॥

(६)

जिसके दीदार को मुसाफिरी को दिल हुआ।
बहुत खूब ऐसा जो नगीच[1] कर पाइये ॥ ॥
खाब सी दुनियाँ को दिल कौन करै सात पाँच[2]।
बन्दे हैं जिसके क्यों न तिसके कहलाइये ॥ २ ॥

---

(१) पास। (२) हैरान, डाँवाडोल।

अगम अगोचर सबहिन में रहता नियार।
जा को जस नीत बर्त्त संतन बार बार गाइये ॥ ३ ॥
कहता मलूक महबूब पिया खूब यार।
सिर लगाय जमीं में सिरदा[१] कराइये ॥ ४ ॥

(७)

बार बार करता हूँ नसीहत मैं तेरी तईं।
क्यों बे हरामखोर साँईं तू बिसारा है ॥ १ ॥
जिसका नित नोन खात मुतलक भी ना डरात।
अच्छा वजूद पाय औरत से हारा है ॥ २ ॥
कौल से बेकौल हुआ किसी की न लेत दुआ।
दोजख[२] के लिये दिल कौन कौन मारा है ॥ ३ ॥
कहता मलूक अब तोबा कर साहेब से।
छाँड़ि दे कुराह जिन जारे पर जारा है ॥ ४ ॥

(८)

बंदा तैं गंदा गुनाह करे बार बार।
साँईं तू सिरजनहार मन में न आनिये ॥ १ ॥
हाथ कछु मेरे नाहीं हाथ सब तेरे साँईं।
खलक के हिसाब बीच मुझ को मत सानिये ॥ २ ॥
रहम की नजर कर कुरहम दिल से दूर कर।
किसी के कहे सुने चुगली मत मानिये ॥ ३ ॥
कहता मलूक मैं रहता पनाह तेरी।
दाता दयाल मुझे अपना कर जानिये ॥ ४ ॥

---

(१) सिजदा। (२) पेट।

(९)

गाफिल है बंदा गुनाह करै बार बार।
काम पड़े साहेब धौं कैसा फरमावैगा ॥ १ ॥
आखिर जमाने को डरता है मेरा दिल।
जब जबरील[1] हाथ गुर्ज लिये आवैगा ॥ २ ॥
खाब सी दुनियाँ दिल को न करै सात पाँच।
काली पीली आँखैं कर फिरिस्ता दिखलावैगा ॥ ३ ॥
कहता मलूक किसी मुल्क में बचाव नहीं।
अब कीजे किरपा तब मेरे मन भावैगा ॥ ४ ॥

(१०)

भील कद करी थी भलाई जिया आप जान।
फील कद हुआ था मुरीद कहु किसका ॥ १ ॥
गीध कद ज्ञान की किताब का किनारा छुआ।
ब्याध और बधिक निसाफ[2] कहु तिसका ॥ २ ॥
नाग कद माला लैके बंदगी करी थी बैठ।
मुझको भी लगा था अजामिल का हिसका ॥ ३ ॥
एते बदराहों की बदी करी थी माफ।
जन मलूक अजाती पर एती करी रिस का ॥ ४ ॥

(११)

मेहर की कफनी औ कुलाह भी मेहर का।
मेहर का सुतंगा[3] इस कमर में लगाइये ॥ १ ॥

---

(१) मौत का फिरिश्ता। (२) इन्साफ़। (३) मूँज की करधनी, जो साधू लोग पहिनते हैं।

मेहर का जामा और तोमा[1] भी मेहर का।
मेहर का आपा इस दिल को पिलाइये ॥ २ ॥
मेहर का आसा[2] और तमासा भी मेहर का।
मेहर के महल बिच मेहरबान को मनाइये ॥ ३ ॥
कहता मलूक बन्दे कहर की लहर में।
कोटिक बह गये बिन मेहर मेहरबान किस राह से पाइये ॥४॥

(१२)

अदम कबित्त का ज़िसकी कबिताई करूँ,
याद करूँ उसको जिन पैदा मुझे किया है ॥१॥
गर्भ बास पाला आतस में नहिँ जाला,
तिसको मैं बिसारूँ तो मैं किसकी आस जियाहूँ ॥२॥
नालत इस दुनियाँ को जो दीन से बेदीन करै,
खाक ऐसे खाने जिन ईमान बेंच लिया है ॥३॥
कहता मलूक मैं बिकाना हरि मूरत पर,
जिस के दीदार से जुड़ाता मेरा हिया है ॥४॥

(१३)

सुपने के सुक्ख देख मोह रहे मूढ़ नर,
जानत हमारे दिन ऐसहिँ बिहायँगे ॥ १ ॥
क्या करेंगे भोग अच्छी सुन्दरी रमैंगे नित्त,
छाँह को लै चारि जून खूँद खूँद खायँगे ॥ २ ॥
सीकरा सो काल है कलसरी[3] सी लपेट लेहै,
चंगुल के तले दबे चिचयायँगे ॥ ३ ॥
कहत मलूकदास लेखा देत होइहै दुक्ख,
बड़े दरबार जाय अन्त पछितायँगे ॥ ४ ॥

---

(१) तोंबा। (२) डंडा, छड़ी। (३) गौरैया चिड़िया।

दीन-दयाल सुनी जब तें तब तें हिया में कछु ऐसी बसी है।
तेरो कहाय के जाउँ कहाँ मैं तेरे हित की पट[1] खैंच कसी है ॥
तेराई एक भरोस मलूक को तेरे समान न दूजो जसो है।
एहो मुरारि पुकारि कहौं अब मेरी हँसी नहिं तेरी हँसी है ॥४॥

साखी

॥ गुरुदेव ॥

जीती बाजी गुरु प्रताप तें, माया मोह निवार।
कहैं मलूक गुरु कृपा तें, उतरा भवजल पार ॥ १ ॥
सुखद पंथ गुरुदेव यह, दीन्हो मोहिं बताय।
ऐसो ऊपट[2] पाय अब, जग मग चलै बलाय ॥ २ ॥
भ्रम भागा गुरु वचन सुनि, मोह रहा नहिं लेस।
तब माया छल हित किया, महा मोहनी भेस ॥ ३ ॥
ता को आवत देखि के, कही बात समुझाय।
अब मैं आया हरि सरन, तेरो कछु न बसाय ॥ ४ ॥
मलुका सोई पीर है, जो जानै पर पीर।
जो पर पीर न जानही, सो फकीर बेपीर ॥ ५ ॥
बहुतक पीर कहावते, बहुत करत हैं भेस।
यह मन कहर खोदाय का, मारे सो दुरबेस ॥ ६ ॥
पीर पीर सब कोई कहे, पीरे चीन्हत नाहिं।
जिन्दा पीर को मारि के, मुरदहिं ढूँढन जाहिं ॥ ७ ॥

---

(१) पटका। (२) उपरवार।

॥ साध जन ॥

जहाँ जहाँ बच्छा फिरै, तहाँ तहाँ फिरै गाय।
कहैं मलूक जहाँ संत जन, तहाँ रमैया जाय ॥ ८ ॥
भेष फकीरी जे करै, मन नहिं आवै हाथ।
दिल फकीर जे हो रहे, साहेब तिनके साथ ॥ ९ ॥

॥ नाम ॥

जीवहुँ तेँ प्यारे अधिक, लागैँ मोहीँ राम।
बिन हरि नाम नहीँ मुझे, और किसो से काम ॥१०॥
कह मलूक हम जबहिं तेँ, लीन्हो हरि की ओट।
सोवत हैँ सुख नींद भरि, डारि भरम की पोट ॥११॥
उहाँ न कबहूँ जाइये, जहाँ न हरि का नाम।
डीगंबर[1] के गाँव में, धोबी का क्या काम ॥१२॥
राम राम के नाम को, जहाँ नहीँ लवलेस।
पानी तहाँ न पीजिये, परिहरिये सो देस ॥१३॥
गाँठी सत्त कुपीन[2] में, सदा फिरै निःसंक।
नाम अमल माता रहै, गिनै इन्द्र को रंक ॥१४॥
राम नाम जिन जानिया, तेई बड़े सपूत।
एक राम के भजन बिन, काँगा[3] फिरै कपूत ॥१५॥
राम नाम एकै रती, पाप के कोटि पहाड़।
ऐसी महिमा नाम की, जारि करै सब छार ॥ १६ ॥
राम नाम औषध करो, हिरदै राखो याद।
संकट में लौ लाइये, दूर करै सब व्याध ॥ १७ ॥
धर्महिँ का सौदा भला, दाया जग ब्योहार।
राम नाम की हाट ले, बैठा खोल किवार ॥ १८ ॥

(१) नागा। (२) लँगोटा। (३) कंगाल।

रहूँ भरोसे राम के, बनिजे[1] कबहुँ न जावँ ।
दास मलूका यों कहै, हरि बिड़वे[2] मैं खावँ ॥ १६ ॥
साहेब मेरा सिर खड़ा, पलक पलक सुधि ले ।
जबहीं गुरु किरपा करें, तबहिं राम कछु दे ॥ २० ॥
मोदी सब संसार है, साहेब राजा राम ।
जा पर चिट्ठी ऊतरे, सोई खरचे दाम ॥ २१ ॥
औरहिं चिन्ता करन दे, तू मत मारै आह ।
जा के मोदी राम से, ताहि कहा परवाह ॥ २२ ॥

॥ बिनती ॥

नमो निरंजन निरंकार, अविगति पुरुष अलेख ।
जिन संतन के हित धर्‌यो, जुग जुग नाना भेख ॥ २३ ॥
हरि भक्तन के काज हित, जुग जुग करी सहाय ।
सो सिव सेस न कहि सकै, कहा कहूँ मैं गाय ॥ २४ ॥
राम राय असरन सरन, मोहिं आपन करि लेहु ।
संतन सँग सेवा करौं, भक्ति मजूरी देहु ॥ २५ ॥
भक्ति मजूरी दीजिये, कीजे भवजल
बोरत है माया मुझे, गहे बाँह बा

॥ प्रेम ॥

प्रेम नेम जिन ना किया, जीतो
अलख पुरुष जिन ना लख्यो, छार प
कठिन पियाला प्रेम का, पिये जो
चारो जुग माता रहै, उतरै जिय
विना अमल माता रहै, बिन ल
बिना बिलायत साहेबी, अंत मा

---

(१) व्यौपार को ... ३) व

रात न आवै नींदड़ी, थरथर काँपे जीव।
ना जानूँ क्या करैगा, जालिम मेरा पीव ॥३०॥
करै भक्ति भगवंत की, करै कबहुँ नहिँ चूक।
हरि रस में राचो रहै, साँची भक्ति मलूक ॥३१॥
मलूक सो माता सुंदरी, जहाँ भक्त औतार।
और सकल बाँझै भईँ, जनमे खर कतवार ॥३२॥
सोई पूत सपूत है, जो भक्ति करे चित लाय।
जरा मरन ते छुटि परे, अजर अमर होइ जाय ॥३३॥
सब बाजे हिरदे बजैं, प्रेम पखावज तार।
मंदिर ढूंढ़त को फिरै, मिल्यो बजावनहार ॥३४॥
करै पखावज प्रेम का, हृदय बजावै तार।
मनै नचावै मगन होय, तिन का मता अपार ॥३५॥

॥ ज्ञान ॥

जब लग थो अँधियार घर, मूस थके सब चोर।
जब मंदिल दीपक बर्‌यो, वही चोर धन मोर ॥३६॥
मन मिरगा बिन मूड़ का, चहुँदिस चरने जाय।
हाँक ले आया ज्ञान तब, बाँधा ताँत लगाय ॥३७॥

॥ गुप्त की महिमा ॥

जो तेरे घट प्रेम है, तो कहि कहि न सुनाव।
अंतरजामी जानिहै, अंतरगत का भाव ॥३८॥
गुप्त प्रगट जेती करी, मेरे मन की खूम।
अंतरजामी रामजी, सब तुम को मालूम ॥३९॥
सुमिरन ऐसा कीजिये, दूजा लखै न कोय।
ओंठ न फरकत देखिये, प्रेम राखिये गोय ॥४०॥

मन्त्रा जपों न कर जपों, जिभ्या कहों न राम।
सुमिरन मेरा हरि करै, मैं पाया बिसराम ॥४१॥

॥ मूर्त्ति पूजा, तीर्थ भ्रमन, कर्म्म धर्म्म ॥

साधो दुनियाँ बावरी, पत्थर पूजन जाय।
मलूक पूजे आतमा, कछु माँगै कछु खाय ॥४२॥
जेती देखै आतमा, तेते सालिगराम।
बोलनहारा पूजिये, पत्थर से क्या काम ॥४३॥
आतम राम न चीन्हहीं, पूजत फिरै पषान।
कैसेहु मुक्ति न होयगी, कोटिक सुनो पुरान ॥४४॥
किरतिम देव न पूजिये, ठेस लगे फुटि जाय।
कहैं मलूक सुभ आतमा, चारो जुग ठहराय ॥४५॥
देवल पुजे कि देवता, की पूजे पाहाड़।
पूजन को जाँता भला, जो पोस खाय संसार ॥४६॥
हम जानत तीरथ बड़े, तीरथ हरि की आस।
जिनके हिरदे हरि बसै, कोटि तिरथ तिन पास ॥ ४७ ॥
संध्या तर्पन सब तजा, तीरथ कबहुँ न जाउँ।
हरि हीरा हिरदे बसै, ताही भीतर न्हाउं ॥ ४८ ॥
मक्का मदिना द्वारका, बद्री और केदार।
बिना दया सब झूठ है, कहैं मलूक बिचार ॥ ४९ ॥
राम राय घट में बसे, ढूढ़त फिरैं उजाड़।
कोइ कासी कोइ प्राग में, बहुत फिरैं झख मार ॥ ५० ॥

॥ दया ॥

दुखिया जन कोइ दुखवै, दुखए अति दुख होय।
दुखिया रोय पुकारिहै, सब गुड़ माटी होय ॥ [illegible] ॥

हरी डारि ना तोड़िये, लागै छूरा बान।
दास मलूका यों कहै, अपना सा जिव जान ॥ ५२ ॥
जे दुखिया संसार में, खोवो तिन का दुक्ख।
दलिद्दर सौंप मलूक को, लोगन दीजै सुक्ख ॥ ५३ ॥

॥ हिंसा ॥

पीर सभन की एक सी, मूरख जानत नाहिं।
काँटा चूभे पीर होय, गला काट कोउ खाय ॥ ५४ ॥
कुंजर चींटी पशू नर, सब में साहेब एक।
काटे गला खोदाय का, करै सूरमा लेख ॥ ५५ ॥
सब कोउ साहेब बन्दते, हिन्दू मूसलमान।
साहेब तिन को बन्दता, जिसका ठौर इमान ॥ ५६ ॥

॥ दया ॥

दया धर्म हिरदे बसै, बोलै अमृत बैन।
तेई ऊँचे जानिये, जिन के नीचे नैन ॥ ५७ ॥
सब पानी की चूपरी, एक दया जग सार।
जिन पर-आतम चीन्हिया, तेही उतरे पार ॥ ५८ ॥

॥ दुर्जन ॥

मलूक बाद न कीजिये, क्रोधै देव बहाय।
हार मानु अनजान तें, बक बक मरै बलाय ॥ ५९ ॥
कलिप डाहि[1] जे लेत हैं, या तें पाप न और।
कह मलूक तेहि जीव को, तीन लोक नहिं ठौर ॥ ६० ॥
मूरख को का बोधिये, मन में रहो विचार।
पाहन मारे क्या भया, जहँ टूटै तरवार ॥ ६१ ॥

(१) कलपा और सता कर।

चार मास घन बरसिया, महा सुखम घन नीर ।
ऐसी मोहकम बखतरी, लगा न एको तीर ॥ ६२ ॥
दाग जो लागा लील का, सौ मन साबुन धोय ।
कोटि बार समझाइया, कौवा हंस न होय ॥ ६३ ॥
दुर्जन दुष्ट कठोर अति, ता की जात न ऐंड़ ।
स्वान पूँछ सुधरै नहीं, अंत टेढ़ की टेढ़ ॥ ६४ ॥
चार पहर दिन होत रसोई, तनिक न निकसत टूक ।
कह मलूक ता मदिल में, सदा रहत हैं भूख ॥ ६५ ॥
दुखदाई सब तें बुरा, जानत है सब कोय ।
कह मलूक कंटक मुवा, धरती हलको होय ॥ ६६ ॥

॥ मन ॥

जो मन गया तो जान दे, दृढ़ करि राखु सरार ।
बिन जिह[1] चढ़ी कमान का, क्या लागेगा तीर ॥६७॥
कोई जीति सकै नहीं, यह मन जैसे देव ।
याके जीते जीत है, अब मैं पायो भेव ॥६८॥
मन जीते बिन जो करै, साधन सकल कलेस ।
तिन का ज्ञान अज्ञान है, नाहिँ गुरू उपदेस ॥६९॥
तैं मत जानै मन मुवा, तन करि डारा खेह ।
ता का क्या इतबार है, जिन मारे सकल बिदेह ॥७०॥

॥ माया ॥

माया मिसरी की छुरी, मत कोई पतियाय ।
इन मारे रसबाद के, ब्रह्महिँ ब्रह्म लड़ाय ॥७१॥

माया मगन महंत के, तुम मत बैठो पास।
कौड़ी कारन लड़ि मरै, कथनी कथै पचास ॥७२॥
नारी नाहि निहारिये, करै नैन की चोट।
कोइ एक हरि जन ऊबरे, पारब्रह्म की ओट ॥७३॥
नारी घोंटी अमल की, अमली सब संसार।
कोइ ऐसा सूफी ना मिला, जो सँग उतरै पार ॥७४॥

॥ चेतावनी ॥

जागो रे अब जागो भैया, सिर पर जम की धार।
ना जानूँ कौने घरी, केहि लेजैहै मार ॥७५॥
गर्व भुलाने देँह के, रचि रचि बाँधे पाग।
सो देँही नित देखिके, चोँच सँवारे काग ॥७६॥
सुन्दर देँही पाय के, मत कोइ करै गुमान।
काल दरेरा खायगा, क्या बूढ़ा क्या ज्वान ॥७७॥
सुन्दर देँही देखिके, उपजत है अनुराग।
मढ़ी न होती चाम की, तो जीवत खाते काग ॥७८॥
उतरे आय सराय में, जाना है बड़ कोह।
अटका आकिल काम बस, ली भठियारी मोह ॥७९॥
जेते सुख संसार के, इकट्ठे किये बटोर।
कन थोरे काँकर घने, देखा फटक पछोर ॥८०॥
इस जीने का गर्व क्या, कहाँ देँह की प्रीत।
बात कहत ढह जात है, बारू की सी भीत ॥८१॥
मलूक कोटा झाँझरा, भीत परी भहराय।
ऐसा कोई ना मिला, जो फेर उठावै आय ॥८२॥
देँही होय न आपनी, समुझ परी है मोहिँ।
अबहीँ तैं तजि राख तूँ, आखिर तजिहै तोहिँ ॥८३॥

॥ मिश्रित ॥

काम मिलावै राम को, जो राखै यह जीत ।
दास मलूका यों कहै, जो मन आवै परतीत ॥८४॥
वहाँ न कोई पहूँचा, जहाँ बसत हैं राम ।
महा बिकट वो पंथ है, पैंड़ा मारै काम ॥८५॥
जहाँ जहाँ दुख पाइया, गुरु को थापा सोय ।
जबहीं सिर टक्कर लगै, तब हरि सुमिरन होय ॥८६॥
आदर मान महत्व सत, बालापन को नेह ।
यह चारो तबही गये, जबहिं कहा कछु देह ॥८७॥
हरि रस में नाहीं रचा, किया काँच ब्योहार ।
कह मलूक वोही पचा, प्रभुता को संसार ॥८८॥
प्रभुताही को सब मरै, प्रभु को मरै न कोय ।
जो कोई प्रभु को मरै, तो प्रभुता दासी होय ॥८९॥
मानुष बैठे चुप करे, कदर न जानै कोय ।
जबहीं मुख खोलै कली, प्रगट बास तब होय ॥९०॥
सब कलियन में बास है, बिना बास नहिं कोय ।
अति सुचित्त में पाइये, जो कोइ फूली होय ॥९१॥

संतबानी की कुल पुस्तकों का सूचीपत्र

[हर महात्मा का जीवन-चरित्र उनकी बानी के आदि में दिया है]

पुस्तक	मूल्य
कबीर साहिब का अनुराग सागर	१।-)
कबीर साहिब का बीजक	१)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह	१।।)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग	१)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग	१)
कबीर साहिब की शब्दावली, तीसरा भाग	।।)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग	।)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेखते और भूलने	।।)
कबीर साहिब की अखरावती	।)
धनी धरमदास जी की शब्दावली	।।।)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली भाग १	१।।)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रंथ सहित	१।।)
तुलसी साहिब का रत्नसागर	१।।।)
तुलसी साहिब का घट रामायण पहला भाग	२)
तुलसी साहिब का घट रामायण दूसरा भाग	२)
दादू दयाल की बानी भाग १ "साखी"	२)
दादू दयाल की बानी भाग २ "शब्द"	१।।=)
सुन्दर विलास	१।=)
पलटू साहिब भाग १-कुंडलियाँ	१)
पलटू साहिब भाग २—रेखते, भूलने, अरिल, कवित्त, सवैया	१)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ	१)
जगजीवन साहिब की बानी पहला भाग	१-)
जगजीवन साहिब की बानी दूसरा भाग	१-)
[illegible]	।=)